EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 12, Issue 1, January-June, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com

संत जैतराम की वाणी में रामोपाख्यान

प्रो० संजीव कुमार

चेयर प्रोफ़ेसर, सन्त साहित्य शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध–पत्र–सार

संत जैतराम ने राजा रघु से लेकर सीता स्वयंवर एवं वनवास तक की कथा का विशद् वर्णन 'रामचंदर कीरत कथा' के अन्तर्गत किया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना नितान्त आवश्यक है कि संत जैतराम शंकराचार्य की अद्वैतवादी परम्परा के विद्वान् हैं जिनकी वाणी में अद्वैतवाद के सभी आयामों पर विचार किया गया है। संत जैतराम निर्गुण–सगुण की संकीर्णताओं से मुक्त ऐसे महस्वत् संत हैं जिन्होंने दोनों भक्ति–मार्गों को बराबर महत्त्व दिया है। संत शिरोमणि जैतराम ने श्रीराम को ही पूर्ण ब्रह्म माना है जो सज्जनों के परित्रात्र के लिए और दुष्टों के संहार के लिए अवतार ग्रहण करते हैं। संत जैतराम का मानना है कि हमारा जीवन पवित्र यत्र के समान है, जिसको आसुरी वृत्तियाँ ध्वस्त करने के लिए आतुर–आकुल रहती हैं। यदि हमें जीवन रूपी यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति करनी है तो बल, शौर्य और दृढ़ता का परिचय देना होगा। इन सभी उपादानों का प्रयोग तभी सम्भव है, जब हम आसुरी वृत्तियों के पोषकों के अधम, नीच और कुत्सित, कृत्यों को देखकर क्रोधित हों, क्योंकि बिना क्रोध किये बल, शक्ति, शौर्य और दृढ़ता का सम्यक् प्रयोग नहीं किया जा सकता। 'रामचंदर कीरत कथा' का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यही है कि हम दीनता, नैराश्य, उदासी, खिन्नता का परित्याग करके; मनोबल और शारीरिक बल को दृढ़ करके आसुरी शक्तियों का दमन करके जीवन रूपी यज्ञ को निर्विघ्न पूरा करें।

मुख्य शब्द : परिष्कृत, परिनिष्ठित, अद्वैतवाद, ब्रह्म, निर्गुणोपासक, आकृष्ट, रघुवंश, श्रीराम, लक्ष्मण, नारायण, आसुरी, यज्ञ, निर्विघ्न, तिरोहित, आक्रमण, क्रोध, हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद, स्वयंवर, लंकापति, वासुकी नाग, सुमति, कुमति।

प्रसिद्ध संत जैतराम द्वारा लिखित विपुल साहित्य उपलब्ध होता है जो वैचारिक–दार्शनिक दृष्टि से प्रभावशाली, महत्त्वपूर्ण एवं समाजोपयोगी है। अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी यह साहित्य परिष्कृत, परिनिष्ठित, सरस और बोधगम्य है। उनकी वाणी को विधिवत् संकलित करके प्रकाशित करवाने का श्रेय डॉ० हनुमंत राय नीरव को है जिन्होंने 'संत जैतराम जी की वाणी ग्रंथ–साहिब' नाम से इसका उत्कृष्ट सम्पादन किया। संत जैतराम के विषय में बहुत अधिक जानकारी नहीं मिलती फिर भी उपलब्ध जानकारी से यह तो स्पष्ट है, कि ''आप तुरतीराम जी के अग्रज जुड़वा भाई थे और आपके पिता श्री गुरु गरीबदास जी थे।''[1] संत जैतराम की जीवन–यात्रा के विषय में इसी 'ग्रंथ–साहिब' में प्रकाश डालते हुए लिखा गया है, ''श्री तुरतीराम जी ने सम्वत् 1874 में देहत्याग किया था। यह निर्विवाद रूप से एक प्रामाणिक तथ्य है। तीन वर्ष पश्चात् सम्वत् 1877 में जैतराम जी देहत्याग करके निजधाम चले गए। उस समय उनकी आयु 73 वर्ष थी। इस गणना के अनुसार आपका जन्म संवत् 1804 में होना सिद्ध होता है।[2] यहाँ यह स्पष्ट करना नितान्त आवश्यक है कि संत जैतराम के पिता संत गरीबदास कीर्ति प्राप्त संत थे और उनके भाई तुरतीराम भी प्रसिद्ध संत थे।

नाम के आगे 'संत' शब्द का प्रयोग होते ही किसी ऐसे साधक का बिम्ब हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाता है जो शंकराचार्य के अद्वैतवाद से प्रभावित है और निर्गुणोपासक है, जिसके साहित्य का एक ही उद्देश्य है विषय–विकारों का खण्डन करके मनुष्य को जगत् के मिथ्यात्व से परिचित करवाकर उसके प्रपंच से मुक्ति का मार्ग सुझाना। निर्गुणोपासक संतों का मानना है कि कर्मकाण्ड, अवतारवाद, माया ये सब मनुष्य को भ्रमित करने वाले विकार हैं। विचारणीय प्रश्न यह है कि मानवता एवं समरसता का संदेश देने वाले संत सगुणोपासना के प्रति कटु एवं कठोर हों यह कैसे सम्भव है? अद्वैतवादी दर्शन को केन्द्र में रखकर संत–साहित्य में निर्गुणोपासना का मार्ग अवश्य प्रशस्त किया गया है, लेकिन महान् संतों ने सगुणोपासना को भी पूर्णतः त्यक्त नहीं किया है और संत जैतराम की वाणी इसका प्रत्यक्ष आदर्श उदाहरण है जिसमें रामावतार का विशद् वर्णन किया गया है।

ब्रह्म के अवतार रूप में अवतरित होने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए संत जैतराम लिखते हैं कि अवतार की अवधारणा के पीछे का मूल कारण ब्रह्म द्वारा अपने भक्तों के कार्यों को सिद्ध करना है –

''निरगुन सैं सरगुन भवै, अपने भगतौं काज।
जैतराम औंतार धरि, सकल सुधारै काज।।''[3]

रामावतार पर प्रकाश डालते हुए संत जैतराम लिखते हैं –

''अजूध्या नगरी धाम मैं, जनमें सिरजनहार।
जैतराम गति को लखै, धन रामचंदर औतार।।''[4]

ब्रह्म की निर्गुण से सगुणावतार होने की विशद् भावना को स्पष्ट करते हुए संत जैतराम लिखते हैं कि हे ब्रह्म आप आकार धारण करके भक्तों को भक्ति करने के लिए आकृष्ट करते हैं और देह धारण करके उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं –

''निरगुन सैं सरगुन होई आवै। आकार धार कर भगति बधावै।
भगतौं कारन देही धारै। बप रूप धरि कारज सारै।।''[5]

रामावतार के साथ–साथ संत शिरोमणि जैतराम ने नृसिंह अवतार की कथा का विहंगम वर्णन किया है –

''आदि पुरुष जगदीस कूं, नरसिंह धारा साज।
हिरनाकुस दवन करि, भला सुधारा काज।।''[6]

रामोपाख्यान को संत जैतराम ने 'रामचंदर कीरत कथा' शीर्षक के अन्तर्गत व्यक्त किया है। संत जैतराम ने 'कीरत कथा' का प्रारम्भ अयोध्या के राजा रघु से किया है। 'रघुवंश' के अनुसार राजा रघु बड़े प्रतापी सूर्यवंशी राजा थे और श्रीरामचन्द्र जी के परदाद थे।''[7] संत जैतराम ने राजा रघु के पराक्रम, शौर्य, ऐश्वर्य, अपार धन–बल और दानवीरता का विस्तृत वर्णन किया है। सत्यवादी राजा रघु के यहाँ एक राजकुँवर का जन्म होता है जिसका नाम 'अज' है। तत्पश्चात् अज के यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम दशरथ था –

''जब राजा कै सुत जो जनमा।
दशरथ जनम लिया अज घरमा।।''[8]

राजा दशरथ के यहाँ चार पुत्रों का जन्म हुआ –

''जहां रामचंदर आये औतारा। लिछमन भरत सतरूघन प्यारा।।
चार बीर का संग बंधाना। खेल खिलारी खेल अमाना।।''[9]

लक्ष्मण जी को 'शेषनाग के अवतार'[10] के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए एवं उनको श्रीरामचन्द्र जी के जीवन का आधार बतलाते हुए सन्त जैतराम जी का कथन है –

''निछमन सेस रूप कू धारा।
रामचंदर कै रहे अधारा।।''[11]

'रामचंदर कीरत कथा' में सन्त जैतराम ने काकभुशुंडि और नारद जी की कथा के माध्यम से श्रीरामचन्द्र को ही परमब्रह्म का अवतार बतलाकर उनके नारायण रूप की प्रतिष्ठा की है –

''नर नारायन देही धारैं । भौजल बूड़त हंस उबारैं।।
भगत उधारन असुर सिंघारन। बार बार आवैं इस कारन।।''[12]

संतप्रवर जैतराम ने श्रीराम को ही पूर्ण ब्रह्म बतलाते हुए समस्त ब्रह्माण्ड का सृजनकर्त्ता बतलाया है –

''पूरन ब्रह्म राम औंतारा। ब्रह्मंडों का सिरजनहारा।।
भगतौं कारन जग मैं आये। भगति बधावन बिरद कहाये।।''[13]

ब्रह्म के अवतार श्रीराम की महत्ता के वर्चस्व को उद्घाटित करते हुए सन्त जैतराम का कथन द्रष्टव्य है –

जगतगुरु है नाम तुम्हारा। इस जग का तू सिरजनहारा।।
ब्रह्मा बिशनू महेसर ध्यावैं। सेस संहस मुख निस दिन गावैं।।''[14]

स्पष्ट है कि कवि ने श्रीराम को पूर्ण ब्रह्म माना और उनके आगमन का महनीय उद्देश्य भक्तों का उद्धार और दुष्टों का संहार है और इसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए परम ब्रह्म प्रत्येक युग में अवतार लेते हैं –

''भगत उधारन असुर सिंघारन। बार बार आवैं इस कारन।।
X X X X X X X X X
ऐसै कारन जुग जुग होई। इनकी लीला लखै न कोई।।''[15]

'रामचंदर कीरत कथा' में सन्त जैतराम ने गुरु विश्वमित्र के निर्देशन में श्रीरामचन्द्र जी एवं लक्ष्मण जी के यज्ञ रक्षार्थ एवं मानव हितार्थ किये गये असुर संहार का रोचक वर्णन किया है। गुरु विश्वामित्र राजा दशरथ के दरबार में आकर उनको बतलाते हैं कि वे निष्काम भाव से अश्वमेघ यज्ञ करना चाहते हैं, लेकिन दुष्ट राक्षस उनकी सफलता में सबसे बड़ी बाधा हैं। अतः असुर संहार करने और निर्विघ्न यज्ञ की समाप्ति के लिए उनको श्रीराम और लक्ष्मण जैसे पराक्रमी योद्धाओं की आवश्यकता है क्योंकि यदि वे यज्ञ के मध्य में क्रोध करके राक्षसों का संहार करते हैं तो इससे यज्ञ का मूल उद्देश्य ही तिरोहित हो जायेगा क्योंकि यज्ञ के समय क्रोध करना उचित नहीं है और बिना क्रोध किये राक्षसों का संहार सम्भव नहीं –

''क्रोध किये जज्ञ होती नाहीं। अस्मेद जज्ञ का भाव नसाई।।
क्रोध किये बिनु जुध नहीं होई। जुध बिना झगड़ा मिटै न कोई।।''[16]

वे राजा दशरथ एवं अन्य सभी से निवेदन करते हैं कि मोह–भाव को त्याग कर वे श्रीराम एवं लक्ष्मण को उनके साथ वन–गमन की अनुमति दें –

''ये रामचंदर औंतार हैं, सुन देवा मम बात।
पतित उधारन बिरद हैं, हैं नाथन के नाथ।।''[17]

गुरु विश्वामित्र द्वारा अश्वमेघ यज्ञ का प्रारम्भ होता है। यज्ञ में विघ्न डालने के लिए और संतों–मुनियों को आतंकित करने के लिए असुरों का आक्रमण होता है। श्रीराम और लक्ष्मण उनका संहार कर देते हैं और बहुत से दुष्ट असुर भयभीत होकर भाग जाते हैं –

''जब रामचंदर ने धनुष टकोरा। हुई आवाज सबद घनघोरा।।
गाजा सबद दूत्र कलपाया। बिस्वामित्र के कोई आया।।''[18]

पराक्रमी श्रीराम और शौर्य की प्रतिमूर्ति लक्ष्मण जी की वीरता से गुरु विश्वामित्र के निष्काम अश्वमेघ यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति हो जाती है। निश्चित ही क्रोध, बल और युद्ध के बिना असुर संहार सम्भव नहीं है।

रामचंदर कीरत कथा' में संत जैतराम ने सीता स्वयंवर का बहुत ही रोचक वर्णन किया है। इसी कथा में गौतम ऋषि की शाप से शिला बनी पत्नी अहल्या के उद्धार का प्रसंग भी वर्णित है। यहीं पर संत जैतराम ने हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद की कथा के माध्यम से झींवर और उसके समस्त परिवार के बैकुण्ठधाम प्रयाण की कथा का सरस चित्रण किया है। सीता स्वयंवर के लिए राजा जनक शिव–धनुष का भंजन करने की शर्त सभी राजाओं के समक्ष रखते हैं। कोई भी राजा शिव–धनुष को हिला भी नहीं पाया। जब सभी ने महाबलि रावण से कहा कि वह शिव–धनुष का भंजन करें –

''तम्ह बलि रावन अनंत अपारा। तुम्हरे बल का ना सुमारा।।
धनक चढ़ावैं लंका धारी। न्यूं सब राजे कहैं पुकारी।।''[19]

रावण के असफल रहने पर श्रीराम शिव–धनुष का भंजन करके सीता जी से विवाह करते हैं–

''राजा बहु आनन्द मैं, जनकपुरी का राव।
सीता प्रनी राम सैं, राख्या सबहन का भाव।।''[20]

तत्पश्चात् शिव–धनुष की अवमानना से आहत परशुराम जी के क्रोध का वर्णन है। परशुराम जी एवं श्रीराम–लक्ष्मण संवाद में संत जैतराम की ओजस्वी शब्दावली पूर्ण आवेग के साथ प्रवाहित हो रही है। संतत को प्राप्त परशुराम जी का क्रोध शान्त हो जाता है और वे आशीर्वाद देकर अपने गन्तव्य की ओर चले गये।

'रामचंदर कीरत कथा' में 'सुमति' और 'कुमति' का मनोवैज्ञानिक स्तर पर कवि ने प्रभावशाली प्रयोग किया है। राजा दशरथ श्रीराम का राजतिलक करके वनवास जाना चाहते हैं। तभी ब्रह्मा एवं अन्य देव यह विचार करते हैं कि यदि राज्य की करना था तो परम ब्रह्म ने श्रीराम के रूप में अवतार ही क्यों लिया। श्रीराम का जन्म तो लंकापति रावण का संहार करने के लिए हुआ है, जिसने देवराज इन्द्र को कैद किया, पाताक लोक जाकर वासुकी नाग की पुत्री से बलपूर्वक विवाह किया, जिसने कुबेर के भण्डार पर स्वामित्व स्थापित कर लिया। ब्रह्मा जी 'कुमति' को बुलाते हैं और उसको विविध प्रकार से समझाकर अयोध्या भेज देते हैं, जिससे रावण–वध का मार्ग प्रशस्त हो सके। 'कुमति' मंथरा दासी के अन्दर प्रवेश कर जाती है, ''मंथुरा बांदी के घट माहीं। कुमति पैठती ढील न लाहीं।।''[21] इसके बाद कैकेयी राजा दशरथ से उनके द्वारा दिये गये वचनों के पालन का स्मरण करवा कर भरत के लिए राज्य और श्रीराम के लिए वनवास माँग लेती है –

''राम और लिछमन बीर कूं, दिसौटे दे बनवास।
त्रिया बंधन हो गया, राजा घालै स्वांस।।''[22]

रावण–वध एवं अन्य राक्षसों का संहार करने के लिए श्रीराम वन की ओर प्रस्थान करते हैं, क्योंकि इस भू–लोक पर उनके अवतार ग्रहण का उद्देश्य ही भू–लोक को दुष्टों से मुक्ति दिलाकर धर्म की स्थापना करना है।

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में हम कह सकते हैं कि संत जैतराम ने राजा रघु से लेकर सीता स्वयंवर एवं वनवास तक की कथा का विशद् वर्णन 'रामचंदर कीरत कथा' के अन्तर्गत किया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना नितान्त आवश्यक है कि संत जैतराम शंकराचार्य की अद्वैतवादी परम्परा के विद्वान् हैं जिनकी वाणी में अद्वैतवाद के सभी आयामों पर विचार किया गया है। संत जैतराम निर्गुण–सगुण की संकीर्णताओं से मुक्त ऐसे महस्वत् संत हैं जिन्होंने दोनों भक्ति–मार्गों को बराबर महत्त्व दिया है। संत शिरोमणि जैतराम ने श्रीराम को ही पूर्ण ब्रह्म माना है जो सज्जनों के परित्रात्र के लिए और दुष्टों के संहार के लिए अवतार ग्रहण करते हैं। संत जैतराम का मानना है कि हमारा जीवन पवित्र यत्र के समान है, जिसको आसुरी वृत्तियाँ ध्वस्त करने के लिए आतुर–आकुल रहती हैं। यदि हमें जीवन रूपी यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति करनी है तो बल, शौर्य और दृढ़ता का परिचय देना होगा। इन सभी उपादानों का प्रयोग तभी सम्भव है, जब हम आसुरी वृत्तियों के पोषकों के अधम, नीच और कुत्सित, कृत्यों को देखकर क्रोधित हों, क्योंकि बिना क्रोध किये बल, शक्ति, शौर्य और दृढ़ता का सम्यक् प्रयोग नहीं किया जा सकता। 'रामचंदर कीरत कथा' का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यही है कि हम दीनता, नैराश्य, उदासी, खिन्नता का परित्याग करके; मनोबल और शारीरिक बल को दृढ़ करके आसुरी शक्तियों का दमन करके जीवन रूपी यज्ञ को निर्विघ्न पूरा करें।

सन्दर्भ सूची

1 सम्पा० डॉ० हनुमंत राय नीरव, संत जैतराम जी की वाणी ग्रंथ–साहिब, पृ० 17
2 वही, पृ० 17
3 वही, पृ० 529
4 वही, पृ० 538
5 वही, पृ० 528

6 वही, पृ० 534
7 राणाप्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, पृ० 440
8 सम्पा० डॉ० हनुमंत राय नीरव, संत जैतराम जी की वाणी ग्रंथ–साहिब, पृ० 537
9 वही, पृ० 538
10 राणाप्रसाद शर्मा, पौराणिक कोश, पृ० 450
11 सम्पा० डॉ० हनुमंत राय नीरव, संत जैतराम जी की वाणी ग्रंथ–साहिब, पृ० 538
12 वही, पृ० 545
13 वही, पृ० 542
14 वही, पृ० 542
15 वही, पृ० 545
16 वही, पृ० 546
17 वही, पृ० 559
18 वही, पृ० 563
19 वही, पृ० 581
20 वही, पृ० 585
21 वही, पृ० 595
22 वही, पृ० 597